प्रातःक्लास ओमशान्ति शिवबाबा याद है? 5-2-68

ओमशान्ति। बाप बैठ रूहानी बच्चों को भिन्न2 गुह्य राज़ समझाते हैं। यह तो बच्चे समझते हैं हम अभी पुरुषोत्तम संगमयुगी हैं। और आये हैं भारत की रूहानी सेवा करने। और तो कोई रूहानी सेवा करने वाला है नहीं। भारत-वासी जो पतित बन गये हैं उन्हों ने ही बुलाया है बाप को कि आओ, भारत खास दुनिया आम को पावन बनाओ। जैसे कोई पर काम रखा जाता है ना। पतित-पावन तो एक ही बाप है। तो जरूर उन पर ही काम रखेंगे। पुरानी दुनिया तो जरूर खत्म होगी। समझते हैं यह खत्म होने वाला है। तो जरूर नई दुनिया स्थापन करने वाले को बुलावेंगे कि यह दुनिया बदल कर दो। तुम रूहानी बच्चे भी बाप के साथ सेवक ठहरे। वह होते हैं जिस्मानी सेवक, तुम हो रूहानी। कल्प2 सुगम युग पर तुम यह सेवा करते हो। परन्तु ड्रामा के टाईम का पता न होने कारण समझ नहीं सकते हैं। बाप जो भारत को पापात्मा से पुण्यात्मा बनाते हैं वह तो अपना टाईम पर अपनी सर्विस पर आये खड़े हो जाते हैं। किसको भी पता नहीं पड़ता है। कल्प पहले भी तुम बच्चों को मालूम था नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। कौड़ियों को पता नहीं था। अभी भी ऐसे हैं। बुलाया तो सभी ने है हे पतित-पावन आओ। पुरानी दुनिया को नई बनाने बुलाना पड़ता है। हे रहमदिल, हे दुःखहर्ता-सुखकर्ता ... एक को ही बुलाते हैं। आया भी एक ही है। तुमको बच्चा बनाये अपनेसाथ शामिल बनाया है सर्विस में। यह बेहद की बातें अच्छी रीत समझने की है। वास्तव में सर्वेन्ट हो भारत के। खुदाईखिज़मतगार हो। खिज़मत करने वाले सर्वेन्ट ही हुये। बेहद का बाप बेहद के बच्चों का सर्वेन्ट है। लौकिक बाप भी सर्वेन्ट होता है ना। तो बच्चों को श्रीमत पर चलना है। बाप के साथ मददगार बन विश्व वर्ल्ड को वायसलेस बनाना है। यह भी जानते हैं कामेषु-क्रोधेषु हैं। विष के साथ आधा कल्प का प्यार है वह बन्द किया जाता है तो जरूर क्रोध आवेगा। फिर अबलाओं पर अत्याचार करते हैं। यह भी नूंध है। जो खुद ही व्यभिचारी हैं तो उनको यह अच्छा लगता है, तुम अव्यभिचारी श्रेष्ठाचारी बनाते हो भी विष बिगर रह नहीं सकते हैं। कैसे2 भ्रष्टाचार में चले जाते हैं। फिर भी नाम बदनाम न करउन्हों को पर्दे अन्दर ढका जाता है कि कहीं एकदम खत्म न हो जाये। बच्चे जानते हैं हम ईश्वरीय सर्विस पर हैं। हमारा धंधा ही है पतितों को पावन करना। सहन भी करना पड़े। कठिनताईयां तो जरूर आवेंगी। विघ्न पड़ेंगे। तुम से कोई पूछे तुम्हारा उद्देश्य क्या है? बोलो उद्देश्य यही है भारत जो पतित बन गया है, तुम पुकारते रहते हो पतित-पावन बाप को कि आकर पतित भारत को पावन बना कर जाओ। यह बाप को हुकुम मिला हुआ है सो बाप हम बच्चों के सहित यह कार्य कर रहे हैं। भारत की रूहानी सेवा कर रहे हैं। पावन बनाने की। हम आपे के सर्विस में ही हैं। हम ने ही बुलाया है, बाप अकेला तो नहीं आ सकेगा पावन बनायेंगे। हम ही उनके मददगार हैं। अभी तो रावण राज्य है ना। रावण तुम्हारा बहुत पुराना दुश्मन है। रामराज्य तो सतयुग को ही कहा जाता है। वहां ही थोड़े ही सकता है। परन्तु इतनी बुधि भारतवासियों में तो है नहीं। नम्रता भी दिखानी चाहिए और चुनरी भी पहननी चाहिए। बुलाते हो कि पतित-पावन आओ। परन्तु अपनको पतित एक भी समझते नहीं हैं। बड़े ही घमण्ड दिखाते हैं। वास्तव में पतितों को मान थोड़े ही होना चाहिए। भारत पर वैश्यालय नाम क्यों पड़ा है क्योंकि वैश्यायें हैं। सतयुग है शिवालय। शिवबाबा ही भारत को पवित्र शिवालय बनाते हैं। हम तो सर्वेन्ट हैं। हम तो बिघ्न आद कल्प पहले भी सहन किये थे। प्रजापिता ब्रह्माकुमारियां शिव बाबा की सन्तान श्रीमत पर भारत को पावन बनाये रही हैं। अब पवित्र तो जरूर बनना ही है। तुम भारतवासी जो कहते हो कल्प2 बुलाते हो कि आकर पतितों को पावन बनाओ, वा पुरानी दुनिया को चेंज करो। तो मैं आकर सब को पावन बनाये सुख कर जाता हूं। फिर आधा कल्प तुम्हें कोई बुलाते ही नहीं। अब तो सभी रूहों पर कट लगी हुई है। सतोप्रधान से सतो, रजो, तमो बनते इस समय तमोप्रधान बन गये हैं। एक भी सतोप्रधान हो न सके। जब सब सतोप्रधान दुनिया है तो एक भी तमोप्रधान हो न सके। अभी तो कलियुग। तमोप्रधान। तुम लोग क्यों नहीं अपने को तमोप्रधान समझते हो। तब तो पुकारते हो आकर

सतोप्रधान, पावनबनाओ। पावन दुनिया सतयुग को कहाजाता है। ऐसे नहीं कोईएक पावन बना तो बस सतयुग हो गया। सतयुग माना सारी दुनिया के लिए सतयुग। तो हम सर्वेन्ट हैं सारी दुनिया को पावन बनाने। भारत पवित्र था तो एक ही धर्म था। चित्रों पर ले जाना चाहिए। यह सब इतने धर्म पीछे आये हैं। म्युज़ियम वा प्रदर्शनी में तुम्हारे पासबहुत आते रहेंगे। समझाने की श्रीमत तो बाप देते रहते हैं फिर उस पर कोई चले वा न चले। भाग्य में ऊंच न है तोकर ही क्या सकते। स्वर्ग का नाम तो बड़ा ही भारी है। नर्क का भी नाम बड़ा भारी है। अभी तो नर्क का पिछाड़ी का पार्ट है। क्या2 चीज़ें निकालते रहते हैं। सायंस आद बहुत सिखते रहते हैं। आत्मा में संस्कार भरती रहती है। जो साथ ले जावेगी। फिर वहां बनावेंगे। अभीकितनी तरक्की कर रहे हैं। आत्मा सीखेगी तो तब तो संस्कार ले जावेगी। तुम भी यहांसे संस्कार ले जाते हो ना। तो बहुत नम्रता प्यार युक्ति सेचुनरी पहनना चाहिए। हम तो भारतवासियों के हुकुम से आये हैं। तुम्हारे बापू जी ने भी पुकारा है हे पतित-पावन आओ-आकर रामराज्य स्थापन करो। मनुष्य तो रामराज्य कर न सके। पुरानी दुनिया जरूर ही कहां हुई है जो उसको इनको रामराज्य कहा जाये। यह तो हैं ही झूठ खण्ड। जो बोलते हैं वह झूठ। पुरानी विश्व को नया बनाना, पतित को पावन बनाना यह कोई कृष्ण का काम थोड़े है। कृष्ण ने थोड़े ही राजयोग सीखाया। इन्हों(ल0ना0)को राजा किसने बनाया? जरूर भगवान ही पावन दुनिया स्थापन करते हैं उस में यह श्रीकृष्णपहला प्रिन्स है सतयुग का। तो बच्चे सर्विस में लग जाये इसमें ही बच्चों का कल्याण है। जो करेगा सो पावेगा। टाईम वेस्ट न करना है। तुम कहते भी हो बहुत गई थोड़ी रही...10वर्ष से9वर्ष, 9वर्ष से 8वर्ष बाकी रही है। दिन प्रति दु दिन दुनिया भ्रष्टाचारी ही होती जाती है। अभीकलियुग का अन्त आये हुआ है। सेकन्डव सेकन्ड टिक2करते टाईम पास होता गया। ड्रामा फिरता गया है। तो फिर जरूर रिपीट करेंगे ना। यह अनादी अविनाशी ड्रामाहै। पार्ट भी अविनाशी है। आत्मा भी अविनाशी है। ऐसे2 विचार कर सर्विस करते रहेंगे तो खुद भी फील करेंगे बराबर हम ने ही पतित-पावन बाप को बुलाया है तो जरूर यह पतित दुनिया होगी। दुवतारें तो नई दुनिया में रहते हैं। इस समय है सब की विनाश काले विपरीत बुधि। जो कहते हैं ईश्वर सर्व-व्यापी है। ठिकस-भितर में हैं। हम तो बाप से प्रीत रखा, बाप से वर्सा ले रहे हैं। सर्वव्यापी है, फिर वर्सा किससे लेवें? क्या ठिकस-भितर से कुछ समझो तो सही। इतने बड़े2 पोजीशन वाले बने होकुछ ज्ञान के सब राज़ को तो समझो। यह एम पी आद इस पतित दुनियामें ही है। राजा तो है नहीं। तुम कितने वज़ीर बने हो। ऐसा कब सुना राजा बिगर वज़ीर हो। यहां तो ढेर के ढेर वज़ीर हैं। राजा-रानी है नहीं। इसको कहा जाता है कौड़व राज्य। प्रजा का प्रजा पर राज्य। अब इनकी भी अन्त होनी है। कौड़वों पाण्डवों की लड़ाई तो लगी नहीं। राजाई न तो हम पाण्डवों के पास है, न तुम्हारे पास है। हम तो तुम सब की, सारी दुनिया के सर्वेन्ट हैं। तुम ने ही बुलाया है। तो बाप हम बच्चों कोसाथ सारे विश्व को पवित्र बनाये रहे हैं। तुम भी पवित्र बनो तो शिवालय में चलो। बड़ी युक्ति से समझाना होता है। ऐसे नहीं चूहे लधे हैं=फिरे हैडगरी...

बड़ी समझ चाहिए। ज्ञान भी किसको समझ से देना चाहिए। म्युज़ियम वा प्रदर्शनी में बहुत अच्छी खबर रहनी चाहिए। कहां कोई किसकी डिसर्विस न करे। कईयों को अपना नशा भी बहुत रहता है। परन्तु बात करने का अकल बिलकुल ही नहीं। देहाभिमान बड़ाही कड़ा है। देहीअभिमानी बनने बिगर हैरिफाईन बन न सके। देही-अभिमानी बनना, जीते जी पूरा मौत है। अपने को आत्मा समझना मासी का घर नहीं है। समझते कुछ भी नहीं, सिर्फ कान्ह हिलाते रहते हैं। देहीअभिमानी बनने से फिर सभी विकार टूट जावें, खुशी का पारा चढ़ जावे। खुशी में आधा भोजन भी खा न सको। कहते है ना खुशी जैसी जैसी खुराक नहीं। 2। जन्म राजाईकी तुमको खुराक मिल रही है। तो पेट सदैव भरा रहना चाहिए। माया का प्रवेश होने से लोभ में आये डबल, ट्रबल भी आये लेते हैं। बाप समझ सकते हैं कौन सर्विस के रात-दिन बुधि लड़ाते रहते हैं। बहुतों का कल्याण करने किसको शौक है।

के कलियुगी सम्बन्ध से दिल नहीं लगेगी। ब्राह्मण कुल वाले ही अच्छे लगेंगे। तुम समझते हो यह पहले2 आदरी है तो उन से ही प्रित होनी चाहिए। देहाभिमान से लुन-पानी रहते हैं। वह रूहानी लव कहां। हमको तो भारत को पुरुषोत्तम बनाना है जरूर। अभी भारत भ्रष्टाचारी व्यभिचारी है। क्या2 होता रहता है। लड़ाई में ढेर के ढेर मनुष्य मरते हैं। भारतवासियों ने हुकुम दिया है हमको पावन दुनिया सतयुग चाहिए। तो जरूर कलियुग दुनिया खत्म हो जायेगी। अभी कितनी लम्बी-चौड़ी दुनिया है। अभी बाप ने हुकुम दिया है पुरानी झाड़ को रिजूविनेट करना है। नया सेपलिंग लगाना है। अभी तक देवी देवता धर्म का कलम लगाये रहे हैं। कितने रावण के सम्प्रदाय हैं। यह सभी विनाश को पाने हैं। अभी यह संगम है। तुम्हारे के लिए और सफाई के लिए। तुम जब पढ़ कर पास होंगे तब ही इस पुरानी दुनिया की सफाई होगी। पतित से पावन दुनिया बननी है ना। फिर नम्बरवार तुम जाकर जन्म लेंगे। अभी पावन बन रहे हो। देवीगुण भी धारण करते हो। यहां ही देवीगुण आत्मा में धारण कर तैयार हो रहना है। आत्मा समझती है बराबर हमको ऐसा देवता बनना है। पहले तो अपने को आत्मा समझो। बहुत कोई मुश्किल होंगे जो अपने को आत्मा समझ यथार्थ रीति याद करते होंगे। आगे यह ज्ञान थोड़े ही था। तुम जो कुछ सुनते हो वह भी ड्रामा में नूंध है। जो हुआ ड्रामा में था। संशय बुधि कहेंगे यह ठीक नहीं। ऐसा क्यों हुआ यह होता था। अरे ड्रामा है ना। जो जिसने किया जैसा पास हुआ ड्रामा। बहुतों को अनेक प्रकार के संकल्प उठते हैं। ड्रामा को ही झूठा बनाये देते हैं। जो हुआ ड्रामा में था। अगर कुछ रांग हो जाता है तो फिर अच्छा बनाना पड़ता है। गन्द में कोई गिर पड़ते हैं ड्रामा में था। फिर से पुरुषार्थ कराया जाता है। एक बार दीवार साफ है। तीसरा बारी गिरे तो फिर कुछ भी नहीं होगा। अजामिल जैसे है ना। अभी अजन तुम ने क्या सिर्फ नाम को है। सच्चा2 वेश्यालय जो हैं उनको शिवालय बनाओ तब नाम वाला हो। वेश्याओं को अजन तुम ने उठाया नहीं है। तुम्हारे में योगबल की ताकत ही नहीं। अभी तो 5% भी देहीअभिमानी नहीं बने हैं। हम आत्मा हैं। हम आत्माएं बाबा के साथ पार्ट बजा रही हैं। वह अवस्था ही कहां है। गरीब लोग चाट आदि लिखते हैं। शाहूकारों को फुर्सत ही कहां है। बाप अभी तुमको समझ दे रहे हैं यह पुरानी दुनिया खत्म करने आया हूं। फिर से आदि सनातन दैवी देवता धर्म की स्थापना हो रही है। देवता बनना है तो वह चलन, दैवीगुण, वातावरण सब दैवी चाहिए। चलन ही नहीं सुधरती है, दैवीगुण धारण नहुई तो वह क्या पद पायेंगे। कहेंगे इनका भी ड्रामा में पार्ट है। राजाई में तो हर प्रकार के चाहिए ना। यज्ञ वत्स और शिव बाबा का रूद्र ज्ञान यज्ञ का वत्स अथवा भगवान का वत्स कहलाने वाले की चलन कैसी होनी चाहिए। बच्चों को समझना चाहिए हम बाबा के साथ आये हैं। पतितों ने बुलाया है कि इस पतित दुनिया की सफाई कर के दो। कलियुगी कचड़े को निकाल सतयुग की स्थापना करने बुलाया है। बच्चों को साथी बनना है। बड़ी ही रायलटी चाहिए। शिव बाबा अन्दर जानते हैं ना हम क्या करने आये हैं। नई दुनिया की स्थापना हो रही है। बाकी यह सब रहेंगे नहीं। विनाश के लिए बड़ी युक्ति रची हुई है। दिन प्रति दिन एक दो के दुश्मन बनते जाते हैं। किसको समझाने की भी बड़ी युक्तियां चाहिए। बाप तो पढ़ाये समझाये रहे हैं। आखिर वह समय भी आ जायेगा। जितना2 जिसने जो पुरुषार्थ किया होगा। वह ऊंच घर में जन्म लेंगे। जहां से फिर राजाई में आ जायेंगे। तुम जानते हो हम स्वर्ग के झाड़ देख रहे हैं। हमको पढ़ाने वाला कौन है, यह भी बहुतों की समझ में नहीं आता है। बाप कहते हैं मैं बहुत साधारण तन में आता हूं। इसलिए कोई विरला ही पहचानते हैं। मैं जो हूं, जैसा हूं, साथ रहने वाले भी समझते नहीं हैं। न समझ सकते हैं। सिर्फ कहेंगे शिव बाबा इस तन में है। बस। उनका अक्युपेशन नहीं जानते।

बाबा

अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रित रूहानी बाप का याद प्यार गुडमार्निंग। नमस्ते।

*-: : ********** : -शिव बाबा याद है? : -********** : -*